माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का अध्ययन

1. **बबीता मधुकर, शोधार्थी, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़**
2. **डॉ. पुष्पा शर्मा, शोध-निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापिका, मनसा शिक्षा महाविद्यालय, कुरूद, भिलाई, दुर्ग (छत्तीसगढ़)**

सारांश

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास एवं सामाजिक चेतना के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बदलती शैक्षिक नीतियों, प्रशासनिक दायित्वों, तकनीकी परिवर्तनों एवं बढ़ती कार्य अपेक्षाओं के कारण शिक्षकों के कार्यस्थल पर तनाव की स्थिति निरंतर बढ़ती जा रही है। कार्यस्थलीय तनाव का प्रभाव शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों में कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया कि अत्यधिक कार्यभार, प्रशासनिक दबाव, समय प्रबंधन की समस्याएँ एवं संसाधनों की कमी शिक्षकों के मानसिक एवं व्यावसायिक जीवन को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक शोध डिज़ाइन पर आधारित है। अध्ययन हेतु 200 माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों का चयन किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य नकारात्मक संबंध पाया गया, जबकि कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान रहा। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि सहयोगात्मक विद्यालयीन वातावरण एवं प्रशासनिक समर्थन शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द : कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि, व्यावसायिक प्रतिबद्धता, माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षक, शिक्षा।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास का आधार मानी जाती है तथा शिक्षक शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्तंभ होते हैं। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करने का कार्य नहीं करते, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक मूल्यों के विकास एवं नैतिक चेतना के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था में तीव्र परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। नई शिक्षा नीतियाँ, तकनीकी परिवर्तन, डिजिटल शिक्षण, प्रशासनिक उत्तरदायित्व, मूल्यांकन प्रणाली एवं अभिभावकीय अपेक्षाओं के कारण शिक्षकों के कार्यक्षेत्र में निरंतर विस्तार हुआ है। इन परिवर्तनों के कारण शिक्षकों के कार्यस्थल पर तनाव की स्थिति भी बढ़ती जा रही है।

कार्यस्थलीय तनाव वह मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति है, जो कार्य से संबंधित दबावों, अपेक्षाओं एवं चुनौतियों के कारण उत्पन्न होती है। जब शिक्षक अत्यधिक कार्यभार, समय की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता, प्रशासनिक दबाव एवं विद्यार्थियों की विविध समस्याओं का सामना करते हैं, तब उनमें तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। यह तनाव शिक्षकों की कार्यक्षमता, मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षण गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसके साथ ही कार्यस्थलीय तनाव का प्रभाव शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि पर भी पड़ता है। यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट नहीं होते, तो उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में कमी आने लगती है। व्यावसायिक प्रतिबद्धता शिक्षक की अपने व्यवसाय, संस्था एवं शिक्षण कार्य के प्रति निष्ठा, समर्पण एवं उत्तरदायित्व की भावना को दर्शाती है। एक प्रतिबद्ध शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक प्रभावी रूप से कार्य करता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव को समझा जाए तथा कार्यसंतुष्टि

एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का अध्ययन किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन इसी संदर्भ में माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

कार्यस्थलीय तनाव की अवधारणा का संबंध मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय दोनों दृष्टिकोणों से है। हैंस सैली (Hans Selye) ने तनाव को शरीर एवं मन की प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया, जो बाहरी दबावों के कारण उत्पन्न होती है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यस्थलीय तनाव शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता को प्रभावित करता है। वहीं मस्लो (Maslow) के आवश्यकता सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति की कार्यसंतुष्टि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति पर निर्भर करती है। यदि कार्यस्थल पर सम्मान, सुरक्षा एवं सहयोग प्राप्त होता है, तो व्यक्ति अधिक संतुष्ट एवं प्रतिबद्ध रहता है। हर्जबर्ग (Herzberg) के द्वि-कारक सिद्धांत के अनुसार कार्यसंतुष्टि को प्रेरक एवं स्वच्छता कारकों से प्रभावित माना गया है। विद्यालयीन वातावरण, प्रशासनिक सहयोग, वेतन, कार्यभार एवं पदोन्नति जैसे कारक शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करते हैं। वहीं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का संबंध संगठनात्मक व्यवहार सिद्धांत से जुड़ा हुआ है, जिसके अनुसार कर्मचारी की संस्था एवं कार्य के प्रति निष्ठा उसकी कार्यक्षमता एवं उत्पादकता को प्रभावित करती है। शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक की प्रतिबद्धता विद्यालय की गुणवत्ता एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों पर कार्यभार एवं प्रशासनिक दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विभिन्न प्रशासनिक, सामाजिक एवं मूल्यांकन संबंधी दायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। इससे उनमें मानसिक तनाव, थकान एवं कार्य असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। यदि शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का अभाव हो, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया एवं विद्यालयीन वातावरण पर पड़ता है। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक किसी भी शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला होते हैं। शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य संबंध को स्पष्ट करने के साथ-साथ शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने में सहायक होगा। यह अध्ययन विद्यालय प्रशासन, शिक्षा नीति निर्माताओं एवं शिक्षाविदों को शिक्षकों के लिए सकारात्मक एवं सहयोगात्मक कार्य वातावरण विकसित करने की दिशा में उपयोगी सुझाव प्रदान करेगा।

समस्या कथन

"कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का अध्ययन : माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों के संदर्भ में"

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।

4. कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करना।
5. कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
6. कार्यस्थलीय तनाव एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

- **H_{01}:** कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
- **H_{11}:** कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य सार्थक संबंध है।
- **H_{02}:** कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
- **H_{12}:** कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य सार्थक संबंध है।

साहित्य समीक्षा

- **शर्मा (2021)** द्वारा किए गए अध्ययन में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि का विश्लेषण किया गया। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि बढ़ते कार्यभार, प्रशासनिक दबाव, समयबद्ध कार्यों एवं अतिरिक्त दायित्वों का शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। शोध में यह पाया गया कि शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अतिरिक्त परीक्षा कार्य, दस्तावेजीकरण, ऑनलाइन डेटा प्रविष्टि, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है, जिससे उनमें मानसिक तनाव एवं थकान की स्थिति उत्पन्न होती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि अत्यधिक कार्यभार एवं निरंतर प्रशासनिक दबाव शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। जिन शिक्षकों को विद्यालय प्रशासन से पर्याप्त सहयोग एवं सकारात्मक कार्य वातावरण प्राप्त नहीं हुआ, उनमें असंतोष एवं तनाव का स्तर अधिक पाया गया। अध्ययन के अनुसार कार्यस्थलीय तनाव शिक्षकों की कार्यक्षमता, शिक्षण गुणवत्ता एवं व्यावसायिक उत्साह को भी प्रभावित करता है।
- **कुमार (2022)** द्वारा किए गए अध्ययन में विद्यालयीन वातावरण, प्रशासनिक सहयोग एवं शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का अध्ययन प्रस्तुत किया गया। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि यदि विद्यालय का वातावरण सहयोगात्मक, सकारात्मक एवं प्रेरणादायक हो, तो शिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित एवं प्रतिबद्ध रहते हैं। शोध में पाया गया कि विद्यालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों को सम्मान, सहभागिता एवं निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान किए जाने पर उनकी कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में वृद्धि होती है। अध्ययन के अनुसार जिन विद्यालयों में प्रधानाचार्य एवं प्रशासन शिक्षकों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार अपनाते हैं, वहाँ शिक्षकों का मनोबल एवं कार्य उत्साह अधिक पाया जाता है। शोध में यह निष्कर्ष भी प्राप्त हुआ कि सकारात्मक विद्यालयीन वातावरण विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को भी प्रभावित करता है, क्योंकि प्रतिबद्ध शिक्षक अधिक प्रभावी एवं नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करते हैं।
- **सिंह (2020)** द्वारा किए गए अध्ययन में कार्यस्थलीय तनाव एवं शिक्षण गुणवत्ता के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि अत्यधिक तनाव की स्थिति शिक्षकों की मानसिक एकाग्रता, शिक्षण दक्षता एवं कक्षा प्रबंधन क्षमता को प्रभावित करती है। शोध में यह स्पष्ट किया गया कि जिन शिक्षकों में तनाव का स्तर अधिक था, उनमें शिक्षण के प्रति उत्साह, रचनात्मकता एवं विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संवाद का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। अध्ययन के अनुसार कार्यस्थलीय तनाव शिक्षकों के व्यवहार, निर्णय क्षमता एवं भावनात्मक संतुलन को भी प्रभावित करता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है। शोध में

यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि तनावमुक्त एवं सहयोगात्मक कार्य वातावरण शिक्षण गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **एनसीईआरटी (2021)** की रिपोर्ट में शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं शिक्षा की गुणवत्ता के मध्य संबंध का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया कि शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि केवल उनके व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं विद्यालयीन वातावरण पर भी पड़ता है। अध्ययन में यह पाया गया कि जो शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं, वे विद्यार्थियों के प्रति अधिक संवेदनशील, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक दृष्टिकोण अपनाते हैं। रिपोर्ट के अनुसार कार्यसंतुष्टि शिक्षकों की उपस्थिति, कार्यनिष्ठा, शिक्षण कौशल एवं नवाचार क्षमता को भी प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि शिक्षकों के लिए सकारात्मक कार्य वातावरण, प्रशिक्षण सुविधाएँ एवं प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराना शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु आवश्यक है।
- **यूनेस्को (2022)** की रिपोर्ट में शिक्षक समर्थन, मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता के मध्य संबंध को विशेष रूप से रेखांकित किया गया। रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान समय में शिक्षकों को केवल शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं भावनात्मक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षकों को मानसिक एवं व्यावसायिक समर्थन प्राप्त नहीं होता, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव उनकी कार्यक्षमता एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षक शिक्षा प्रणाली के केंद्र में होते हैं, इसलिए उनका मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यावसायिक संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। रिपोर्ट के अनुसार विद्यालयों में सहयोगात्मक वातावरण, परामर्श सेवाएँ, मानसिक स्वास्थ्य सहायता एवं व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षकों की कार्यक्षमता एवं प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होते हैं। यूनेस्को ने यह भी उल्लेख किया कि स्वस्थ एवं संतुष्ट शिक्षक ही गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं।

शोध अंतराल

उपलब्ध अध्ययनों में कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि पर पृथक-पृथक अध्ययन किए गए हैं, किन्तु माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों के संदर्भ में कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध का समग्र अध्ययन सीमित रूप से उपलब्ध है। विशेष रूप से भारतीय विद्यालयीन संदर्भ में इस विषय पर अधिक शोध अपेक्षित है।

शोध पद्धति

- **शोध डिज़ाइन-** प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक शोध डिज़ाइन का प्रयोग किया गया। इस शोध डिज़ाइन के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता से संबंधित विभिन्न तथ्यों का व्यवस्थित वर्णन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। सहसंबंधात्मक शोध डिज़ाइन के माध्यम से इन तीनों चरों के मध्य संबंध की दिशा एवं स्तर का अध्ययन किया गया, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि कार्यस्थलीय तनाव शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता को किस सीमा तक प्रभावित करता है।
- **शोध की प्रकृति-** प्रस्तुत अध्ययन मात्रात्मक शोध प्रकृति पर आधारित रहा। अध्ययन में शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किए गए। मात्रात्मक शोध पद्धति के माध्यम से विभिन्न चरों के मध्य संबंधों का वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया गया, जिससे शोध की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता में वृद्धि हुई।

- **जनसंख्या**- अध्ययन की जनसंख्या में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। इसमें विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक शामिल किए गए, जिससे अध्ययन में विविध शैक्षिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।\
- **न्यादर्श**- प्रस्तुत अध्ययन हेतु कुल 100 माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों का चयन किया गया। इन शिक्षकों के माध्यम से कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता से संबंधित सूचनाओं का संकलन किया गया। अध्ययन में चयनित उत्तरदाताओं ने शोध विषय से संबंधित आवश्यक जानकारी प्रदान की।
- **न्यादर्श चयन विधि**- अध्ययन में स्तरीकृत एवं यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया। स्तरीकृत न्यादर्श चयन के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों एवं शिक्षकों के वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया, जबकि यादृच्छिक चयन विधि के माध्यम से उत्तरदाताओं का निष्पक्ष चयन किया गया। इससे अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं वस्तुनिष्ठता में वृद्धि हुई।
- **आँकड़ों के स्रोत**

    - **प्राथमिक स्रोत**- प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन विधियों के माध्यम से किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षकों के विचार, अनुभव एवं प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की गईं। साक्षात्कार विधि के माध्यम से शिक्षकों के कार्यस्थलीय अनुभवों एवं मानसिक स्थिति से संबंधित विस्तृत जानकारी एकत्रित की गई, जबकि अवलोकन विधि के माध्यम से विद्यालयीन वातावरण एवं कार्य परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।
    - **द्वितीयक स्रोत**- द्वितीयक आँकड़ों के अंतर्गत पुस्तकों, शोध पत्रों, विभिन्न जर्नलों एवं सरकारी रिपोर्टों का उपयोग किया गया। इन स्रोतों के माध्यम से अध्ययन विषय की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं पूर्व शोधों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई, जिससे अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक आधार प्रदान किया जा सका।

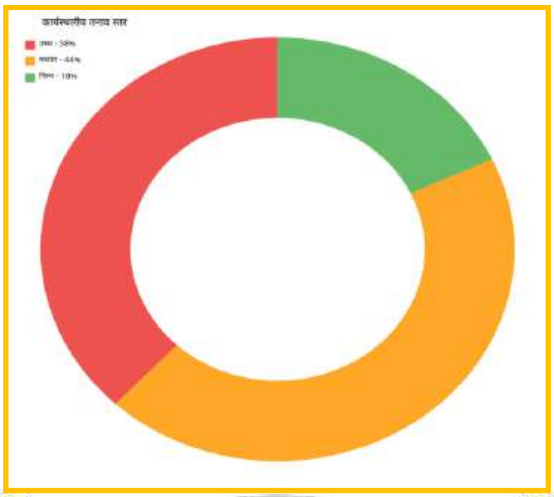
- **शोध उपकरण**- प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के संग्रह हेतु कार्यस्थलीय तनाव मापन स्केल, कार्यसंतुष्टि मापन स्केल एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापन स्केल का प्रयोग किया गया। कार्यस्थलीय तनाव मापन स्केल के माध्यम से शिक्षकों के तनाव स्तर का अध्ययन किया गया, जबकि कार्यसंतुष्टि मापन स्केल द्वारा शिक्षकों की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का मूल्यांकन किया गया। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापन स्केल के माध्यम से शिक्षकों की अपने व्यवसाय एवं संस्था के प्रति निष्ठा, समर्पण एवं उत्तरदायित्व की भावना का अध्ययन किया गया।
- **सांख्यिकीय विश्लेषण**- संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु Mean, Standard Deviation, Correlation एवं t-test जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। Mean के माध्यम से उत्तरदाताओं की औसत प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया, जबकि Standard Deviation द्वारा आँकड़ों के विचलन एवं विविधता का विश्लेषण किया गया। Correlation तकनीक के माध्यम से कार्यस्थलीय तनाव, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध की दिशा एवं स्तर का अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त t-test का प्रयोग विभिन्न समूहों के मध्य प्राप्त अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता ज्ञात करने हेतु किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण, सारणीकरण एवं व्याख्या

सारणी 1 - शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव का स्तर

तनाव स्तर	संख्या	प्रतिशत
उच्च	38	38%
मध्यम	44	44%
निम्न	18	18%

कुल	100	100%



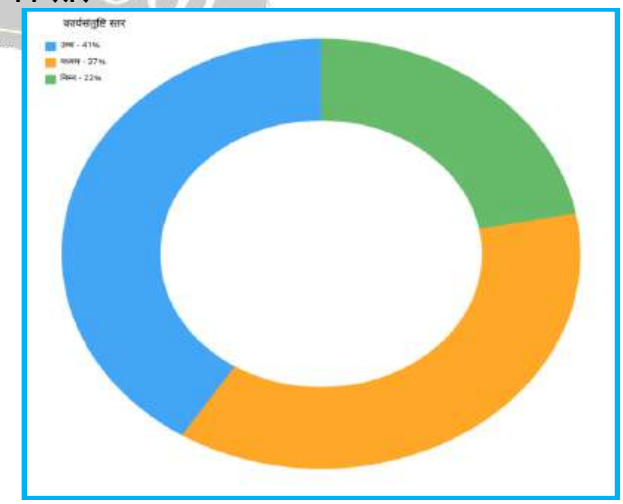
व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षक कार्यस्थलीय तनाव की मध्यम एवं उच्च स्थिति का अनुभव कर रहे हैं। कुल 100 शिक्षकों में से 38 प्रतिशत शिक्षकों में कार्यस्थलीय तनाव का स्तर उच्च पाया गया। इन शिक्षकों ने अत्यधिक कार्यभार, प्रशासनिक दबाव, समयबद्ध कार्यों एवं परीक्षा संबंधी दायित्वों को तनाव का प्रमुख कारण बताया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि 44 प्रतिशत शिक्षक मध्यम स्तर के तनाव से प्रभावित थे। इन शिक्षकों का मत था कि विद्यालयीन कार्यों की निरंतरता एवं बदलती शैक्षिक अपेक्षाओं के कारण मानसिक दबाव की स्थिति बनी रहती है। वहीं 18 प्रतिशत शिक्षकों में तनाव का स्तर निम्न पाया गया। इन शिक्षकों को विद्यालय प्रशासन से सहयोग, सकारात्मक कार्य वातावरण एवं संतुलित कार्यभार प्राप्त था। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कार्यस्थलीय तनाव शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

सारणी 2

शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का स्तर

कार्यसंतुष्टि स्तर	संख्या	प्रतिशत
उच्च	41	41%
मध्यम	37	37%
निम्न	22	22%
कुल	100	100%



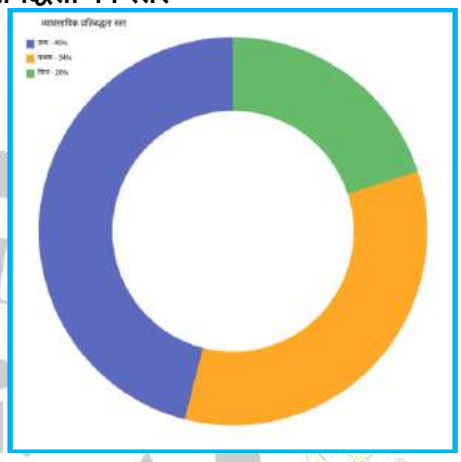
व्याख्या

सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का स्तर संतोषजनक पाया गया। कुल 41 प्रतिशत शिक्षकों ने अपने कार्य के प्रति उच्च संतुष्टि व्यक्त की। इन शिक्षकों ने विद्यालयीन सहयोग, विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबंध, सामाजिक सम्मान एवं शिक्षण के प्रति रुचि को कार्यसंतुष्टि के प्रमुख कारण बताया। 37 प्रतिशत शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का स्तर मध्यम पाया गया। इन शिक्षकों का मानना था कि वे अपने कार्य से संतुष्ट तो हैं, किन्तु प्रशासनिक दबाव एवं कार्यभार के कारण कई बार मानसिक थकान अनुभव करते हैं। वहीं 22 प्रतिशत शिक्षकों ने कार्यसंतुष्टि का स्तर निम्न बताया। इन शिक्षकों के अनुसार संसाधनों की कमी, वेतन संबंधी समस्याएँ एवं कार्यस्थलीय तनाव उनकी संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि कार्यसंतुष्टि शिक्षकों की कार्यक्षमता एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है।

सारणी 3

शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर

प्रतिबद्धता स्तर	संख्या	प्रतिशत
उच्च	46	46%
मध्यम	34	34%
निम्न	20	20%
कुल	100	100%



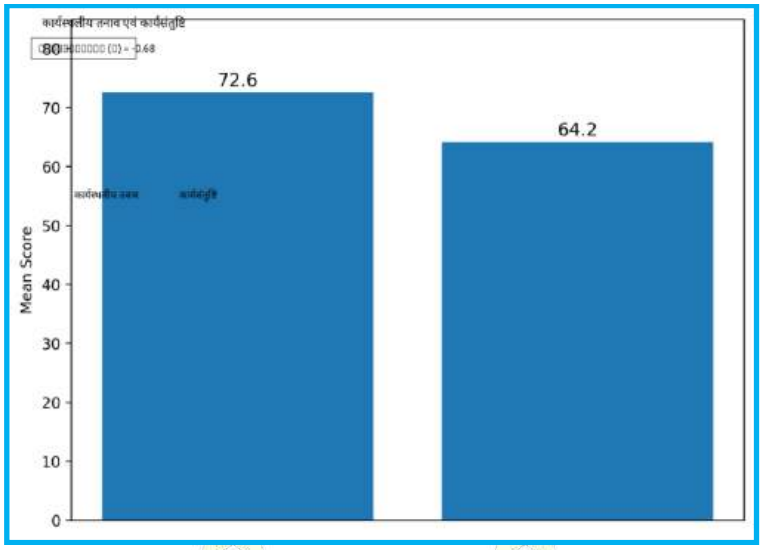
व्याख्या

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिकांश शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर उच्च पाया गया। कुल 46 प्रतिशत शिक्षक अपने व्यवसाय एवं शिक्षण कार्य के प्रति अत्यधिक समर्पित एवं उत्तरदायी पाए गए। इन शिक्षकों ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं विद्यालय की प्रगति में सक्रिय सहभागिता दिखाई। 34 प्रतिशत शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर मध्यम पाया गया। इन शिक्षकों ने अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तो व्यक्त किया, किन्तु कार्यस्थलीय तनाव एवं प्रशासनिक दबाव के कारण उनके उत्साह में कभी-कभी कमी देखी गई। वहीं 20 प्रतिशत शिक्षकों में प्रतिबद्धता का स्तर निम्न पाया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि कार्यसंतुष्टि एवं सकारात्मक विद्यालयीन वातावरण व्यावसायिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सारणी 4

कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य संबंध

चर	Mean	SD	Correlation (r)
कार्यस्थलीय तनाव	72.6	8.4	-0.68
कार्यसंतुष्टि	64.2	7.1	



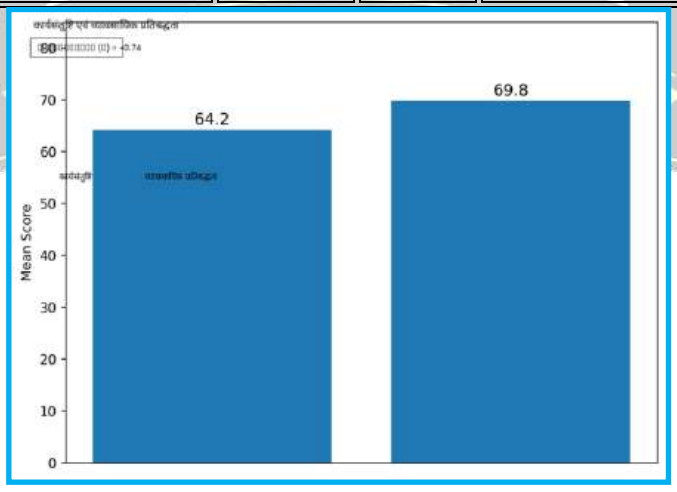
व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि कार्यस्थलीय तनाव एवं कार्यसंतुष्टि के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। प्राप्त सहसंबंध गुणांक (r = -0.68) यह संकेत करता है कि जैसे-जैसे शिक्षकों में कार्यस्थलीय तनाव का स्तर बढ़ता है, वैसे-वैसे उनकी कार्यसंतुष्टि में कमी आने लगती है। अध्ययन में यह पाया गया कि अत्यधिक प्रशासनिक दबाव, समय की कमी एवं अतिरिक्त दायित्व शिक्षकों के मानसिक संतुलन एवं कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। जिन शिक्षकों में तनाव का स्तर कम पाया गया, उनमें कार्य के प्रति संतुष्टि एवं उत्साह अधिक देखा गया। इससे स्पष्ट होता है कि तनावमुक्त एवं सहयोगात्मक कार्य वातावरण शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सारणी 5

कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य संबंध

चर	Mean	SD	Correlation (r)
कार्यसंतुष्टि	64.2	7.1	+0.74
व्यावसायिक प्रतिबद्धता	69.8	6.5	



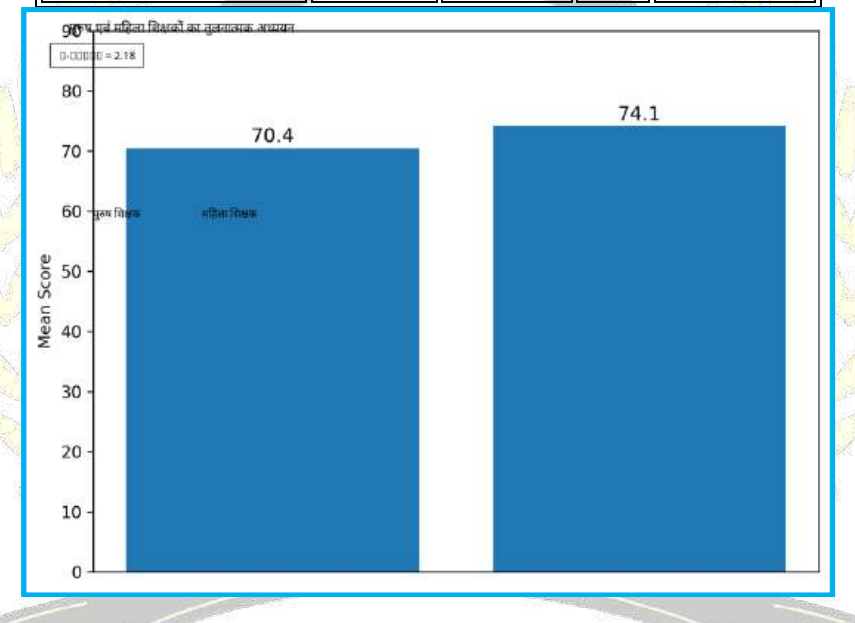
व्याख्या

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया। प्राप्त सहसंबंध गुणांक (r = +0.74) यह दर्शाता है कि जिन शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का स्तर अधिक था, उनमें व्यावसायिक प्रतिबद्धता भी अधिक पाई गई। ऐसे शिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित, उत्तरदायी एवं प्रेरित पाए गए। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि संतुष्ट शिक्षक विद्यार्थियों के साथ अधिक सकारात्मक व्यवहार करते हैं तथा विद्यालयीन गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता निभाते हैं। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कार्यसंतुष्टि शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

सारणी 6

पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कार्यस्थलीय तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या	Mean	SD	t-value
पुरुष शिक्षक	50	70.4	7.2	2.18
महिला शिक्षक	50	74.1	8.1	



व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों में कार्यस्थलीय तनाव का स्तर पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक पाया गया। महिला शिक्षकों का Mean स्कोर 74.1 तथा पुरुष शिक्षकों का Mean स्कोर 70.4 प्राप्त हुआ। प्राप्त t-value (2.18) सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाई गई। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि महिला शिक्षकों को विद्यालयीन दायित्वों के साथ-साथ पारिवारिक उत्तरदायित्वों का भी निर्वहन करना पड़ता है, जिसके कारण उनमें तनाव का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। यह परिणाम कार्यस्थलीय तनाव के लैंगिक प्रभाव को स्पष्ट करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कार्यस्थलीय तनाव माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि जिन शिक्षकों पर अत्यधिक कार्यभार, प्रशासनिक दबाव,

समयबद्ध कार्यों का बोझ एवं संसाधनों की कमी अधिक थी, उनमें मानसिक तनाव का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। अत्यधिक तनाव की स्थिति शिक्षकों की मानसिक एकाग्रता, कार्य उत्साह एवं शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करती है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी कार्यसंतुष्टि में कमी देखने को मिलती है। तनावग्रस्त शिक्षक अपने कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में कठिनाई अनुभव करते हैं, जिससे शिक्षण गुणवत्ता एवं विद्यालयीन वातावरण दोनों प्रभावित होते हैं।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि जिन शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का स्तर अधिक था, उनमें व्यावसायिक प्रतिबद्धता भी अधिक देखी गई। ऐसे शिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित, उत्तरदायी एवं उत्साही पाए गए। वे विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं नैतिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाते हैं तथा विद्यालय की प्रगति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। कार्यसंतुष्ट शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग करने, विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने एवं सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण विकसित करने में अधिक सक्षम पाए गए। इससे यह स्पष्ट होता है कि कार्यसंतुष्टि शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक विद्यालयीन वातावरण, प्रशासनिक सहयोग एवं संतुलित कार्यभार शिक्षकों की कार्यक्षमता एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन विद्यालयों में सहयोगात्मक वातावरण, सम्मानजनक व्यवहार एवं पारदर्शी प्रशासनिक व्यवस्था उपलब्ध थी, वहाँ शिक्षकों का तनाव स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। इसके विपरीत जिन विद्यालयों में अत्यधिक प्रशासनिक दबाव, संसाधनों की कमी एवं असहयोगात्मक वातावरण विद्यमान था, वहाँ शिक्षकों में कार्य असंतोष एवं तनाव की स्थिति अधिक देखी गई। अध्ययन में यह भी ज्ञात हुआ कि विद्यालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों को समय-समय पर प्रोत्साहन, प्रशिक्षण एवं मानसिक समर्थन प्रदान किए जाने से उनकी कार्यसंतुष्टि एवं प्रतिबद्धता में सकारात्मक वृद्धि होती है।

प्रस्तुत अध्ययन यह संकेत करता है कि शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने के लिए केवल पाठ्यक्रम एवं तकनीकी संसाधनों पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक विकास को भी समान रूप से महत्व देना आवश्यक है। यदि शिक्षकों को तनावमुक्त, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक कार्य वातावरण उपलब्ध कराया जाए, तो वे अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य कर सकते हैं तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं। अतः विद्यालय प्रशासन, शिक्षा नीति निर्माताओं एवं समाज को शिक्षकों की कार्य परिस्थितियों, मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिससे शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी, गुणवत्तापूर्ण एवं मानवीय बनाया जा सके।

सुझाव

1. शिक्षकों के कार्यभार को संतुलित किया जाए।
2. विद्यालयों में सहयोगात्मक एवं सकारात्मक वातावरण विकसित किया जाए।
3. शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य हेतु परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
4. प्रशासनिक दबाव को कम कर शिक्षण कार्य पर अधिक ध्यान दिया जाए।
5. शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण एवं प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, जे) .सी .2019). *शिक्षक एवं विकासशील समाज में शिक्षा*। नई दिल्लीविकास पब्लिशिंग हाउस। :
2. बेस्ट, जेएवं काह्न .डब्ल्यू ., जे) .वी .2018). *शिक्षा में अनुसंधान*। नई दिल्लीप्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया। :

3. भटनागर, एएवं गुप्ता ., एन) .2021). विद्यालयीन शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव का अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 10(2), 45–58।
4. बुच, एम) .बी .2017). *शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षण*। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
5. गुप्ता, एस) .पी .2020). *उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान*। इलाहाबादशारदा पुस्तक भवन। :
6. हर्जबर्ग, एफ) .1966). *कार्य एवं मानव स्वभाव*। क्लीवलैंडवर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी। :
7. कौल, एल) .2019). *शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति*। नई दिल्ली :विकास पब्लिशिंग हाउस।
8. कुमार, एस) .2022). विद्यालयीन वातावरण एवं शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़*, 12(1), 66–74।
9. मैस्लो, ए) .एच .1954). *प्रेरणा एवं व्यक्तित्व*। न्यूयॉर्कहार्पर एंड रो। :
10. मंगल, एस) .के .2021). *उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान*। नई दिल्लीपीएचआई लर्निंग। :
11. एनसीईआरटी।)2021). *शिक्षक कल्याण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा रिपोर्ट*। नई दिल्लीएनसीईआरटी। :
12. पाण्डेय, आर) .2020). माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का अध्ययन। *इंडियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन*, 8(3), 55–63।
13. सैली, एच) .1976). *तनावपूर्ण जीवन*। न्यूयॉर्कमैकग्रा हिल। :
14. शर्मा, आर) .2021). प्रशासनिक दबाव एवं शिक्षक तनावएक अध्ययन। : *एजुकेशनल रिव्यू जर्नल*, 9(2), 41–52।
15. सिंह, पी) .2020). शिक्षकों में कार्यस्थलीय तनाव एवं शिक्षण प्रभावशीलता। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 7(1), 28–39।
16. यूनेस्को।)2022). *शिक्षा प्रणाली में शिक्षक समर्थन एवं मानसिक स्वास्थ्य*। पेरिसयूनेस्को पब्लिशिंग। :
17. उपाध्याय, एसएवं मिश्रा ., वी) .2021). विद्यालयीन शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट*, 14(2), 70–81।
18. यादव, आर) .2023). माध्यमिक विद्यालयीन शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव एवं कार्यसंतुष्टि। *जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी एजुकेशन*, 11(4), 88–97।

IJRMP ESTD 2013 ISSN: 2320-0901